आबू में रक्त संचय व संरक्षण केन्द्र (ब्लड बैंक)

● ब्रह्माकुमार रामलखन, शान्तिवन (आबू रोड)

हरेक मनुष्य में पाँच से छः लीटर ही खून पाया जाता है। चौबीस घन्टे में इसका हमारी नस-नाड़ियों में निरन्तर प्रवाह करीब 1200 कि.मी.की लम्बाई जितना हो जाता है। दुर्घटनाओं, शल्य क्रियाओं, जलने, प्रसूति व असाध्य बीमारियों से ग्रसित रोगियों को तथा एनिमिया, ल्यूकेमिया (रक्त कैंसर) जैसे कई रोगों में खून की आवश्यकता पड़ती ही है। सुरक्षित खून की सारे संसार में आवश्यकता है परन्तु सुरक्षित रक्त की 30 प्रतिशत से अधिक व्यवस्था नहीं हो पा रही है। सुरक्षित रक्तदाता अपनी बीमारियों और कमजोरियों को भी स्पष्ट बता देते हैं जिससे लेने वाले मरीजों को घातक नुकसान उठाना नहीं पड़ता है। ग्लोबल हास्पिटल, माउन्ट आबू और ट्रोमा सेंटर, आबू रोड के ब्लड बैंक में प्रायः सुरक्षित और सात्विक रक्त संचित किया जाता है। यहाँ अधिकतर राजयोगी, ब्रह्मचारी, ज्ञानी-योगी लोग विश्व कल्याण अर्थ स्वेच्छा से रक्तदान करके आध्यात्मिक सेवा में महायोगदान करते रहते हैं।

ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी भ्राता निर्वैर जी, संचालक डॉ.प्रताप भाई और डॉ.सतीश गुप्ता जी ने ब्रह्माकुमारीज़ के वरिष्ठ भाई-बहनों व बापदादा से राय लेकर यहाँ सर्व सुविधा सम्पन्न ब्लड बैंक की व्यवस्था बनायी है। अब तो ट्रोमा सेन्टर में 1000 यूनिट से भी अधिक ब्लड संचय करके विधिवत् संरक्षित करने की सुविधायें हैं। रक्त के अवयवों को भी अलग-अलग करके रखने व देने की उत्तमतर व्यवस्थायें हैं। करीब 200 कि.मी.के दायरे में पहले यहाँ एक भी ऐसा ब्लड बैंक नहीं था। करीब 50 क्षेत्रीय अस्पतालों व नर्सिंग केन्द्रों को भी यहीं से मदद मिलती है। चौदह जून और 1 अक्टूबर को ''रक्तदाता दिवस'' के रूप में हर साल मना कर विशिष्ट रक्तदाताओं को सम्मानित भी किया जाता है।

ग्लोबल हॉस्पिटल, माउन्ट आबू का ब्लड बैंक लायन्स क्लब के द्वारा और ट्रोमा सेन्टर, आबू रोड का ब्लड बैंक रोटरी क्लब, आबू रोड तथा रोटरी इन्टरनेशनल द्वारा संरक्षण प्राप्त है। दोनों ही ब्लड बैंक आधुनिकतम उपकरणों द्वारा सुसज्जित हैं और 24 घन्टे सुविधायें देने के लिए तत्पर रहते हैं। गरीब मरीज़ों से रक्त का सर्विस चार्ज तक नहीं लिया जाता है। प्रगति के साथ ट्रोमा सेन्टर के ब्लड बैंक ने एक रक्त यूनिट से चार मरीजों की जान बचाने की तकनीक हासिल कर ली है।

खून ऐसी चीज़ है जिसे किसी प्रयोगशाला या कारखाने में तैयार नहीं किया जा सकता है। शरीर में इसकी कमी होने पर, व्यक्ति ही समय पर मदद कर सकते हैं। सितम्बर, 2010 में यूथ फेस्टिवल के दौरान एक दिन में 1200 यूनिट रक्तदान का रिकार्ड बना। हरेक के खून में 55 प्रतिशत प्लाज्मा, बाकी 45 प्रतिशत में लाल व सफेद कोषाणु तथा प्लेटलैट्स होते हैं। मात्र एक ही मि.ली.खून में 5 लाख लाल कोषाणु (RBC), 4000 से 11000 तक सफेद कोषाणु (WBC) और डेढ़ लाख से चार लाख तक प्लेटलैट्स होते हैं। सभी कोषाणु प्लाज्मा नामक तरल पदार्थ में तैरते रहते हैं। रक्तदान के तुरन्त बाद ही खून की कमी पूरी होनी शुरू हो जाती है। तरल पदार्थ अर्थात् प्लाज्मा की पूर्ति तो मात्र 24 घण्टे के अन्दर ही हो जाती है। खून के बाकी हिस्सों की पूर्ति भी दो सप्ताह के अन्दर ही हो जाती है।

खून के लाल कोषाणु फेफड़ों द्वारा आक्सीजन लेकर शरीर के सारे हिस्सों में पहुँचाते हुए मात्र 120 दिन

तक ही जीवित रह सकते हैं। सफेद कोषाणु शरीर में प्रवेश करने वाले रोगाणुओं का नाश करते हैं परन्तु इनकी उम्र 7 घन्टे से लेकर कुछ ही दिन तक होती है। प्लेटलैट्स घाव होने पर खून जमाने की मदद करते हैं जिनकी आयु पाँच दिन तक ही होती है।

नस-नाड़ियों में बहने वाला तरल पदार्थ प्लाज्मा, शरीर के सभी हिस्सों तक कोषाणुओं, पौष्टिक तत्वों तथा अनेकों रसायनों को पहुँचाता रहता है। किसी का भी ब्लड ग्रुप जीवन में कभी भी बदलता नहीं है। संसार के सभी प्रकार के मनुष्यों को मात्र चार ही ब्लड ग्रुप्स में बाँटा जा सकता है जिन्हें AB, A, B, तथा O ग्रुप के नाम से जाना जाता है। अठारह साल से 60 साल तक का कोई भी पुरुष 3 मास में एक बार तथा महिलायें 4 मास में एक बार रक्तदान कर सकते हैं। हृदयरोग, टी.बी., थायराइड, कैंसर, एड्स, गुर्दे की खराबी, मलेरिया तथा यौन सम्बन्धी बीमारियों से पीड़ित लोगों को तो रक्तदान करना ही नहीं चाहिए। रक्तदाता का वजन 45 कि.ग्रा. और हिमोग्लोबिन 12.5 से किसी भी हालत में कम नहीं होना चाहिए। रक्तदान में पौने घंटे से अधिक समय नहीं लगता है। उसके बाद चाय-काफी जैसी उत्तेजक चीजें नहीं लेनी चाहिएँ परन्तु कुछ सुपाच्य नाश्ता आदि करके खूब पानी पी लेना चाहिए। व्यायाम-धूम्रपान आदि का एकाध दिन परहेज भी रखना ही चाहिए।

जिन्हें खून की अति आवश्यकता है उन्हें रक्तदान देना अर्थात् नवजीवन प्रदान करना है। इसलिए स्वस्थ शरीर और स्वर्णिम दिल हो तो आज ही इस महादान के लिए तत्पर हो जाइए। कहीं न कहीं कोई आप द्वारा अपनी जान बचाने की आश लगाये अवश्य बैठा होगा। साहस करके आगे बढ़िए और दूसरों को जीयदान दीजिए। किसी भी ग्रुप के खून का दान करके भगवान की सर्वोच्च रचना मानव के लिए आप अद्भुत मदद कर रहे हैं। इससे जिस आत्म-गौरव और संतुष्टि का अनुभव होगा उसे शब्दों में बयान किया ही नहीं जा सकता है। आगे बढ़िये और दानी-महादानी का सुखद अनुभव कीजिए। अपने रक्त का अंशदान करना वैसा ही है जैसे व्यापार से धर्मादा निकालना। पैसे का दान तो लेने वाले को भोजन, कपड़े आदि की सुविधाएँ ही देता है और रक्तदान से जीवन दान मिल जाता है। ❖

जगदम्बा माँ

ब्र.कु.निरंजन, इलाहाबाद

जब कभी हम टूटते हैं ज़िन्दगी की मार से।
होके व्याकुल छटपटाते, तड़पते लाचार से।।

और जब 'माया' जगत की जकड़ लेती है हमें।
दुख, निराशा, भय, अंधेरा घेर लेता है हमें।।

दर्द, पीड़ा सहते-सहते निकलने लगती है जां।
मन पटल पर तब अचानक प्रकट हो जाती है मां।।

गोद में लेकर हमें पुचकारती, संवारती।
घाव तन-मन के वो धोती, आरती उतारती।।

दूर कर दुनिया के संकट, देती है जीवन नया।
तूने जो ''माँ'' को बनाया, ''रब'' तेरा है शुक्रिया।।

''मम्मा'' का स्मरण करिये, शख्सियत को जानिये।
उनका जो किरदार था, अच्छी तरह पहचानिये।।

प्यारी ''मां'' की पालना, बच्चे भुला सकते नहीं।
आज भी लगता कि ''मम्मा'' पास अपने हैं यहीं।।

अपने रूहानी गुणों से, शक्ति से, कर्त्तव्य से।
''मम्मा'' जगदम्बा बनीं, शुभ भावना और सत्य से।।

ब्रह्मा बाबा ने गुणों को देख 'सरस्वती' कहा।
शक्ति के सब रूप उनमें प्रकट होते थे सदा।।

आज जब हम पुन: ''माँ'' की याद, चिन्तन कर रहे।
'फालो फादर' कह रहीं वो, हम सब क्या सुन रहे?